Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

U.G. semester-5
MJC-8 (Clinical Psychology)

नैदानिक मूल्यांकन (Clinical Assessment)

नैदानिक मूल्यांकन एक वैज्ञानिक, बहु-आयामी, व्यक्तिगत और निरंतर प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य समस्या की पहचान, निदान, उपचार योजना, प्रगति मूल्यांकन, पूर्वानुमान और अनुसंधान है।

नैदानिक मूल्यांकन की प्रकृति (Nature of Clinical Assessment)

1. वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित प्रक्रिया

नैदानिक मूल्यांकन एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक उपकरणों और तरीकों का प्रयोग किया जाता है।

जैसे – मानकीकृत परीक्षण (Standardized Tests), संरचित साक्षात्कार (Structured Interviews) और अवलोकन।

2. बहु-आयामी स्वरूप (Multidimensional)

यह केवल व्यक्ति के लक्षणों (Symptoms) पर नहीं, बल्कि उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे – व्यक्तित्व, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, सामाजिक संबंध, भावनात्मक स्थिति और व्यवहार पर केंद्रित होता है।

3. व्यक्तिगत अंतर पर आधारित

प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक समस्या और उसकी अभिव्यक्ति अलग होती है।

इसलिए मूल्यांकन व्यक्ति-विशेष के अनुरूप किया जाता है।

4. नैदानिक दृष्टिकोण (Clinical Orientation)

इसका मुख्य उद्देश्य किसी मानसिक रोग या विकार की पहचान करना और उसकी गंभीरता को समझना होता है।

Edit with WPS Office

5. निरंतर प्रक्रिया (Ongoing Process)

मूल्यांकन केवल रोग की शुरुआत में ही नहीं किया जाता, बल्कि उपचार के दौरान और बाद में भी स्थिति का मूल्यांकन किया जाता है।

6. निष्पक्षता एवं विश्वसनीयता (Objectivity & Reliability)

परिणाम व्यक्तिगत धारणाओं पर आधारित नहीं होते, बल्कि परीक्षणों, साक्षात्कार और अनुसंधान-आधारित विधियों पर निर्भर होते हैं।

नैदानिक मूल्यांकन के उद्देश्य (Purpose of Clinical Assessment)

1. समस्या की पहचान (Identification of Problem)

व्यक्ति की मानसिक, भावनात्मक या व्यवहारिक समस्याओं को समझना।

जैसे – चिंता (Anxiety), अवसाद (Depression), व्यक्तित्व विकार (Personality Disorder)।

2. निदान (Diagnosis)

यह स्पष्ट करना कि रोगी किस मानसिक रोग/विकार से पीड़ित है।

जैसे – DSM-5 या ICD-10 के मानदंडों के अनुसार वर्गीकरण।

3. उपचार योजना बनाना (Treatment Planning)

रोगी की स्थिति को समझकर, उपयुक्त उपचार (Counseling, Psychotherapy, Medication) की योजना तैयार करना।

4. प्रगति का मूल्यांकन (Evaluation of Progress)

उपचार के दौरान रोगी की स्थिति में हुए सुधार या परिवर्तन को मापना।

इससे यह पता चलता है कि चुनी गई विधि कितनी प्रभावी है।

Edit with WPS Office

5. पूर्वानुमान लगाना (Prognosis)

रोगी की आगे की स्थिति कैसी होगी, उसका अंदाज़ा लगाना।

जैसे – रोगी जल्दी ठीक होगा या उसे लंबे समय तक उपचार की आवश्यकता होगी।

6. अनुसंधान व शैक्षिक उद्देश्य (Research & Academic Purpose)

नैदानिक मूल्यांकन शोधकर्ताओं और छात्रों को मानसिक विकारों को समझने और नई उपचार विधियों के विकास में मदद करता है।

Edit with WPS Office